मुनि श्री सुव्रतसागर जी पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं)

बचपन से हम ज्ञान बिना ही, भटक रहे बनके बच्चे।
जनम-जनम के पाप मिटाने, आये हैं बनने सच्चे॥
जन्म जरा दुख मरण नशायें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये जल अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

भव की ज्वाला धधक रही है, झुलस रहे हैं खड़े-खड़े।
शीतल वाणी चंदन सम है, छाया पाने चरण पड़े॥
भव का ये संताप मिटायें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु चंदन अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

क्षत-विक्षत यह जीवन अपना, कैसे इसे सँवारे हम।
व्रत संयम से रक्षित होने, तुमको रोज पुकारें हम॥
तुम जैसे सु-व्रत हम पायें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु अक्षत अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

सोना चाँदी रुपया पैसा, जिन्हें चाहिए दो उनको।

सुंदर काया जिन्हें सुहाये, कामदेव कर दो उनको॥
तुमसे तुमको माँग रहे हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु हम पुष्प चढ़ायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

व्यंजन बहुत तरह के भोगे, फिर भी तो होती इच्छा।
भूख मिटे ना प्यास मिटे ना, अब कैसे होगी दीक्षा॥
निज रस चखने दीक्षा धर लें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु नैवेद्य चढ़ायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

चेतन करें आप सम उज्ज्वल, जिससे चंदा शर्माये।
ज्ञान तेज इतना चमकायें, सूरज फीका पड़ जाये॥
अंतर्मन तुम सम उज्ज्वल हो, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये दीप जलायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं...।

संकट उपसर्गों में भी तुम, कर्म काटने चलते हो।
खिन्न न होते प्रसन्न रहते, समता धरकर खिलते हो॥
हम भी दुष्कर्मों को सह लें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये धूप जलायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

अगर डोर तुम बन जाओ तो, हम पतंग बन उड़ लेंगे।
अगर आप पतवार बनो तो, भवसागर हम तिर लेंगे॥
सदा आपके साथ रहें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये फल अर्पित हैं, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

मुनिवर की पूजन करें, मन में अति हर्षाएँ।
नमोऽस्तु कर जयमालिका, आओ हम सब गाएँ॥

(शंभू)

हे मुनिवर तेरे चरणों में, हम श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
जो जिनशासन के बेटे हैं, हम उनको शीश झुकाते हैं॥
जो विद्या गुरु के शिष्य रहे, पर अपने भाग्य सितारे हैं।
ऐसे सुव्रतसागर मुनिवर, सचमुच ही हमको प्यारे हैं॥1॥
है ग्राम पीपरा जन्म लिया, उपकृत फिर सागर जिला किया।
पितु साबूलाल माँ चंद्ररानी को, खुशियाँ देकर धन्य किया॥
भाई सुनील के लघु भ्राता, तीनों बहनों के हो प्यारे।
लौकिक शिक्षा भी उच्च कोटि की, कॉलिज में भी थे न्यारे॥2॥
जब सागर के भाग्योदय में, विद्या गुरुवर के दर्श किए।
तब अन्ठानवें में गुरुवर से, व्रत ब्रह्मचर्य 'राजेश' लिए॥
फिर कृपा बड़ेबाबा की पा, संघस्थ हुए फिर गमन किया।
नेमावर में विद्यागुरु ने, दे दीक्षा 'सुव्रत' बना दिया॥3॥
सु-व्रत पा सुव्रतसागर जी, अपने व्रत सुव्रत बना रहे।
अपनी मुनि चर्या पालन कर, अंतस में डुबकी लगा रहे॥

प्रभु की भक्ति में डूबे तो, विधान अनेकों रचा दिये।
श्री पूज्य बड़ेबाबा विधान रच, अतिशय बाबा के बता दिये ॥4॥
जिनचक्र विधान में चौबीसों, जिनवर की महिमा दिखलाई।
श्री सिद्धचक्र अरिहंतचक्र में, शुद्धातम सी झलकाई॥
भक्तामर एकीभाव और, कल्याणमंदिर विधान रचे।
रच समवसरण आदि अनेक, शायद कोई ना शेष बचे ॥5॥
रच बुंदेली पूजन विधान, बुंदेली संत प्रसिद्ध बने।
भक्तों को भक्ति-अर्चना को, श्रीजिनवाणी के छंद बने॥
ऐसे अनेक पूजा विधान रच, पद्यानुवाद कई बना रहे।
जिनका आश्रय पा भव्य जीव, खुद को धर्मात्मा बना रहे ॥6॥
सुन स्वाध्याय प्रवचन इनके, संस्कारी रूप सज जाते हैं।
ऐसे बुंदेली संत हमें, जीवन का लक्ष्य बताते हैं॥
हे! मुनिवर 'सुव्रतसागरजी', हमको भी सु-व्रत दान करें।
'संजय' का नमोऽस्तु स्वीकारें, सो सुव्रत धर कल्याण करें ॥7॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तुम जैसे हम भी धरें, विद्या के भण्डार।
विश्व शांति के भाव से, करें शांति जल धार॥

(शांतये शांतिधारा)

माँ जैसे बच्चे तुम्हें, करें सदा ही याद।
सो नमोऽस्तु सादर करें, देना आशीर्वाद॥

(पुष्पांजलिं...)

===